International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(3): 155-156

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(3): 155-156
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 23-03-2022
Accepted: 27-04-2022

ममता यादव
शोध छात्रा पी एच0 डी0 स्कालर गोविंद बल्लभ पंत पी जी कॉलेज प्रतापगंज जौनपुर सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

लक्ष्मी देवी गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर संस्कृत विभाग गोविन्द बल्लभ पन्त पी0जी0 कॉलेज प्रतापगंज, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

शोभा यादव
रिसर्च स्कॉलर संस्कृत विभाग लखनऊ यूनिवर्सिटी, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रियंका यादव
शोध छात्रा पी एच0 डी0 स्कालर गोविंद बल्लभ पंत पी जी कॉलेज प्रतापगंज जौनपुर सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
ममता यादव
शोध छात्रा पी एच0 डी0 स्कालर गोविंद बल्लभ पंत पी जी कॉलेज प्रतापगंज जौनपुर सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

महाकवि कालिदास की भाषा पद्धति

ममता यादव, लक्ष्मी देवी गुप्ता, शोभा यादव, प्रियंका यादव

प्रस्तावना

कवि कालिदास केवल संस्कृत साहित्य के ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व साहित्य के मुकुटालंकार हैं। उनकी सूक्ष्म दृष्टि ब्राह्मजगत और अन्तर्जगत की विधाओं का दर्शन करती हुई, मनोरम पदावली में उनको अनुस्यूत करती हैं। कवि अपने काव्यों में सत्यम्, शिवम, सुन्दरम् का जो सामन्जस्य स्थापित किया है उससे उनकी काव्य प्रतिभा परिलक्षित होता है। रस, छन्द, अलङ्कार, भाषा शैली की अभिव्यक्ति एवं प्रकृति वर्णन आदि ऐसे प्रतिमान है, जिनके आलोक में कालिदास का काव्य कौशल परिलक्षित होता है।

कवि कालिदास जी का अपनी भाषा पर पूर्ण अधिकार है। उनकी भाषा सरल, सरस, परिष्कृत, प्रान्जल, मनोरम एवं प्रसादगुण युक्त है। कवि ने अपने काव्यों में कहीं भी पाण्डित्य प्रदर्शन की चेष्टा नहीं की है। इसी कारण छोटे–छोटे समास का प्रयोग सरल ढंग से हुआ है। मेघदूत का एक पद देखिए–

''जातवंशे भूवनविदते पुष्करावर्तकानां।
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।।''[1]

शब्द और अर्थ का सामन्जस्य वर्णित करना कवि की अपनी प्रमुख विशेषता है। किस शब्द का प्रयोग कब और कहाँ करना है और किस अर्थ में करना है, इसको कवि भलीभाँति जानता है। इसका सुन्दर उदाहरण कुमार सम्भव महाकाव्य के पंचमसर्ग के निम्न श्लोक में देखा जा सकता है–

'द्वयं गतं सम्प्रति शोचनीमता स्रमागमप्रार्थनयापिनाकिनः।
कला च सा कान्तिमयी कलावतस्त्वमस्यलोकस्य च नेत्रकौमुदी।''[2]

कवि कालिदास की सरल शब्द योजना उनके काव्य सौष्ठव को व्यत करती हैं। वे जिस प्रकार के भाव को जिस स्थल पर अभिव्यत करना चाहते हैं उनके अनुकूल ही भाषा का प्रयोग करते हैं। उनकी रचनाओं में जगह–जगह शब्दों की सरलता के साथ–साथ भावों की गम्भीरता के भी दर्शन होते हैं। मेघदूत के पूर्व मेघ में कवि ने गम्भीरा नदी में नायिका का आरोप करके बड़ा ही सुन्दर भाव प्रस्तुत किया है–

''तस्याः किंचित्करघृतमिवप्राप्तवानीरशाखंहत्वा नीलं सलिलवसनं मुतरोधेनितम्बम्।
प्रस्थानं ते कथमपि सखे लम्बामानस्यभाविज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः।।[3]

इसी प्रकार कालिदास जी ने अन्य काव्य कृतियों में भी सरल और गम्भीर भाषा का प्रयोग किया है। उनके पास शब्दों का अगाध भण्डार है। भाषा और शब्दकोष पर अधिकार के कारण भाषा में असाधारण मनोरमता का सुन्दर प्रवाह है। संवाद सरल सूक्ष्म तथा आकर्षक है कि वह विषय को अधिक आकर्षक एवं रोचक बना देती है। उनकी भाषा में कहीं भी अस्वाभाविकता के दर्शन नहीं होते हैं। छोटे–छोटे सरल वाक्यों के प्रयोग से सूक्ष्मतम् भावों की अभिव्यति की गयी है। पात्रों के अनुकूल ही भाषा का प्रयोग किया गया है, जो पात्र जिस कोटि का है, उससे उसी प्रकार की भाषा बुलवायी गयी है। अभिज्ञानशाकुन्तलम नाटक में हम देखते हैं कि सभी उच्च श्रेणी के पुरूष पात्र संस्कृत बोलते हैं और निम्न श्रेणी के पुरुष तथा सभी स्त्री पात्र प्राकृत भाषा में बोलते हैं।

यह महाकवि कालिदास का अद्भुत वैशिष्ट्य है। विश्व साहित्य में कालिदास ने जो सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की है, उससे उनकी शैली का विशेष योगदान है।

उन्होंने अपनी कल्पना शति और सृष्टि निपुणता से रसचित कथानक की सजीव और आकर्षण बनाने में अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया है। कवि कालिदास जी ने अपनी कृतियों की विषय वस्तु को प्राचीन आख्यानों से लेकर उन्हें अपने काव्य कौशल और कल्पना शति से इस प्रकार सजाया है कि वह अत्यन्त रमणीय आकर्षण बनाने में अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया है। कवि कालिदास जी ने अपनी कृतियों की विषय वस्तु को प्राचीन आख्यानों से लेकर उन्हें अपने काव्य कौशल और कल्पना शति से इस प्रकार सजाया है कि वह अत्यन्त रमणीय कथावस्तु बन गयी है। कालिदास वैदमी शैली के श्रेष्ठ कवि माने गये हैं,

''वैदभीरतिसन्दर्भेकालिदासे विशिष्यते।''

महाकवि कालिदास की भाषा अत्यन्त प्रौढ़ परिष्कृत तथा प्रान्जल है। उसकी सबसे बड़ी विशेषता है, रसानुकूलता। महाकवि ने प्रकरण, प्रसङ्ग पात्र एवं वर्ण्य विषय के अनुकूल शब्दों का समुच्चय किया है। कहीं–कहीं पर शब्द ध्वनि करती है। एक सुन्दर उदाहरण दृष्टव्य है– रघुवंश महाकाव्य में नन्दिनी गाय को सिंह ने पकर लिया संरक्षक राजा दिलीप को यह असहा था, उनकी प्रतिक्रिया किनी आकर्षक है–

''तो मृगेन्द्रगामीवधाय वध्यस्यशरंशरण्यः।
जाताभिषङ्गो नृपनिर्निषङ्गादुद्धुर्तमैच्छत्प्रसभोदध्रतारि।।''[4]

इस प्रकार महाकवि की शैली सुकुमार है। उनकी शैली में दुरूहता में सुबोधता, काव्य में नाटकीयता, नैसर्गिक सुषमा में भी कारूण्य प्रवाह जैसे विरूद्ध गुणों का समन्वय मिलता है। उनकी शैली में भाषा, सौष्ठव मनोरम भावाभिव्यति, अलंकारों का सहज विन्यास, अन्तः एवं बाह्य प्रकृति का चारूचित्रण, रसों का पुष्ट परिपाक जीवन दर्शन की रूचिर स्थापना विधिविधानिधानता तथा मनोभावों की मार्मिक अनुभूति मनोज्ञश्रन संयोग उपस्थित करती है। इनकी शैली में कहीं पर उपमस्थत करती है। इनकी शैली में कहीं पर उपमाओं का लालित्य है तो कहीं पर उत्प्रेक्षाओं की ऊँची उड़ान है, तो कहीं प्रा०जवल पदावली का सौकुमार्य कहीं माधुर्य की विठास है तो अत्यन्त प्रसाद का आनन्द कहीं कला की प्रधानता है, तो कहीं कल्पना कुल मिलाकर काव्य का सर्वस्व इनकी शैली प्रस्फुटित हो उठता है।

कवि कालिदास ने पूव मेघ में 'स्त्रीणामाघं– प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु।''[6] कह कर यह स्पष्ट किया है कि स्त्रियाँ प्रारम्भ में अपने प्यार को कहकर प्रकट नहीं करती बल्कि अपने हाव–भाव द्वारा प्रकट करती है। कालिदास ने संयोग श्रृगर का मेघदूत में बड़ा ही मनोरम वर्णन किया है। गंभीरा नदी रूपी नायिका चंचल चितवन के साथ जब मेघ रूपी नायक से मिलती है तो भला वह उसे कैसे छोड़ सकता है।

''ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः।''[7]

कपि के काव्यों में रसों के सामंजस्य को देखने से उन्हें इन सिद्ध कवीश्वर की उपाधि से विभूषित किया जाना उचित है। कवि ने श्रृगर रस के अतिरिक्त करूण, शान्त, वीर, हास्य सभी रसों का सुन्दर परिपाक देखने को मिलता है। कुमार सम्भव के रति–विलाप और रघुवंश में अज विलाप को देखकर ऐसा लगता है कि जैसे करूण रस की धारा फूट पड़ी हो।

नवनवोन्मेषशलिनीप्रज्ञा से अनुप्राणित होकर जो वर्णन में निपुण है वह कवि कहलाता है और उसका कर्म ही काव्य है।[8] कवि अतएव वर्णन नैपुण्य का स्वामी है। भारतीय दृष्टि से कविता शक्ि शाली भाषा भावनाओं का सहज प्रवाह नहीं मानी गई है। इस हालात में कवि के लिए भावानुभूति की तीव्रता की एकमात्र उपलभ्य होती है।[9]

कवि कालिदास की भाषा शैली में उत्कृष्ट कला साधना पद–पद पर परिलक्षित होती है। महर्षि अरविन्द ने इस विषय में लिखा है कि कालिदास मूर्धन्य कलाकार हैं उनकी कृतियों से निर्गत होने वली ध्वनि वहीं ध्वनि है, जो प्राक्तन साहित्य की सर्वोत्तम रचनाओं में मिलती है। इस साहित्य की शैलीगत विशेषता है एक सुसंगठित किन्तु स्वाभाविक संक्षिप्तता एक मसृण गम्भीर्य एवं सुस्निग्ध औदार्य पद्यगत श्रेष्ठ स्वर सामंजस्य, परिष्कृत गद्य का सशक्त एवं प्रांन्जल सौन्दर्य और सबसे बढ़कर सक्षिप्त तथा पदविष्णु पदावली की निश्तित अर्थवक्ता जिसमें रंग और माधुर्य छलकते हैं।

विश्व साहित्य में कालिदास ने जो प्रतिष्ठा अर्जित की है, निःसन्देह इसका श्रेय उनकी शैली को है। कैसा भी नीरस से नीरस कथानक क्यों न हो कवि अपनी कल्पना शक्ति और सृष्टि निपुणता से उसको सजीव व आकर्षण बनाने की कला में वे निपुण है। उन्होंने अपनी काव्य कृतियों की कथावस्तु प्राचीन आख्यानों से लेकर उन्हें अपनी मनोरम कल्पना शक्ति के द्वारा इस प्रकार सजाया है कि कथानक अत्यन्त गम्भीर बन गये हैं।[10]

संदर्भ–सूची

1. मेघदूतम् – पृष्ठ 1/6
2. कु0सं0 – 5/71
3. मेघदूतम् – पृष्ठ 1/44
4. रघुवंश– 2/30
5. रघुवंशम्– प्रथमसर्ग पृ 27, व्याख्याकार– डॉ. अनुराग शुक्ल
6. पूर्व में– 1/29
7. मेघदूतम्
8. प्रज्ञानवनवोमेषशलिनीप्रतिभागताः भामह
9. महाकविकालिदास, डॉ. रमाशंकर तिवारी, पृष्ठ 351
10. मेघदूतम्, पृ. 17 व्याख्याकार